पंजी. क्र. S/25125/1993

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

Akhil Bhartiya Rashtriya Saishik Mahasangh

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली–110 053

दूरभाष एवं फेक्स : 011–22914799, 9868711893, 9414040403

E-mail : abrsmdelhi@rediffmail.com, abrsmdelhi@gmail.com www.abrsm.in

A B R S M

गुरूवन्दन कार्यक्रम (गुरूपूर्णिमा, 22 जुलाई 2013)

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा प्रतिवर्ष चार स्थाई कार्यक्रम नियोजित किये गये हैं। जिनमें गुरूवन्दन कार्यक्रम को इस सत्र में गुरूपूर्णिमा (इस वर्ष 22 जुलाई 2013) से प्रारम्भ करने का निश्चय जमशेदपुर (झारखण्ड) में सम्पन्न राष्ट्रीय कार्यकारिणी में हुआ है। गत दो वर्ष से राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इस पर विचार विमर्श चला तद्पोरान्त इसका उचित पद्धति से क्रियान्वयन करना है। इससे समाज में शिक्षक सम्मान के प्रयासों को अतीव बल मिलेगा।

हम प्राचीन भारत के गौरवमय अतीत के पृष्ठों के प्रकाश में विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि भारत में सदैव ही गुरू/ शिक्षक/ आचार्य आदि हमें समयानुसार सभी प्रकार की शिक्षा–दीक्षा देकर राष्ट्र को सिरमोर रखते आये हैं। इसमें उनके तपःपूत जीवन के अनुकरणीय आचार–विचार से समाज में श्रेष्ठ नागरिकों की कोई कमी नहीं रही। ऐसी एक लम्बी परम्परा जो हमें विरासत में मिली। उसी को दृष्टि में रख महर्षि वेदव्यास के प्रेरक जीवन के आलोक में वर्तमान भारतीय शिक्षक परम्परा को बनाये रखना चाहते हैं जिसके स्मरण मात्र से मन में हम अपने पूर्वजों पर गर्व कर सकें और सदैव हमें प्रेरित कर वर्तमान चुनौतियों में मार्ग निकाल कर सम्पूर्ण संसार में 'कृणवंतो विश्वं आर्यम्' के उद्घोष को स्थापित कर सकें। इसी विचार के अनुसरण में निम्न पद्धति से अपने संगठनों की सबसे नीचे की इकाई स्तर पर कार्यक्रमों की योजना करें और प्रत्येक इकाई पर इस पत्रक की छाया प्रति (Photo State)भेजकर इसके क्रियान्वयन हेतु अवश्य प्रेरित करें।

<u>ध्यातव्य बिन्दू–</u>

1. गुरूपूर्णिमा (इस वर्ष 22 जुलाई 2013) के दिन कार्यक्रम 1½ से 2 घन्टे का सम्पन्न करें। इसे एक–दो दिन आगे पीछे भी कर सकते हैं।
2. कार्यक्रम में शिक्षकगण के साथ बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षाविद्, शिक्षा अधिकारी एवं समाज के गणमान्य जन सहभाग करें।
3. भारत माता, सरस्वती के चित्र के साथ महर्षि वेदव्यास का भी चित्र लगाया जाय।
4. सर्वप्रथम सभी शिक्षक महर्षि वेद व्यास के चित्र पर पुष्पार्चण करें।
5. मां सरस्वती के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन तत्पश्चात् सरस्वती वंदना हो।
6. मंच पर कम ही लोग रहें।
7. विषय प्रतिपादन एक से अधिक बंधु कर सकते हैं। जिसमें भारतीय शिक्षक परम्परा के अनुकरणीय जीवनों का परिचय करावें। वक्ताओं द्वारा वर्तमान चुनौतियों के परिपेक्ष्य में प्राचीन परम्पराओं का स्मरण करा कर आदर्श शिक्षक बनने की प्रेरणादायी आवश्यकता प्रतिपादित करें।
8. हम जानते हैं कि सभी बच्चे घर–परिवार, समाज के व्यवहार/आचरण से सीखते हैं। पाठशालाएं कैसे जीवन गढ़ने में सक्षम बने, यह चुनौती अपने समक्ष है।
9. कार्यक्रम का संचालन योग्य रीति से हो। व्यवस्थाएं सादगीपूर्ण हो तथा वातावरण प्रेरक बने।
10. मीडिया में प्रसिद्धि हेतु कार्यक्रम के पश्चात् सभी समाचार पत्रों को कार्यक्रम के समाचार एवं फोटो भेजे जायें।
11. कार्यक्रम का सम्पूर्ण वृत्त अपनी इकाई से ऊपरी इकाई पर अवश्य भेजे जायें।